UPPSC

CSAT
HINDI

BY – JITENDRA SONI SIR

→ H → T
→ P → T
→ T
→ ज → T

आज
7 कल
14 परसों
21

श्री राधा

संस्कृत → पालि → प्राकृत → अपभ्रंश → हिंदी

संस्कृत ↓ 13

पालि, प्राकृत — ऋ

अपभ्रंश ↓ 8

ऋ

ऐ

औ

हिंदी — 11

हिंदी

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ । → 11

महर्षि पाणिनि = ③

अ, इ, उ, ऋ → मूलस्वर

उ → ह्रस्वस्वर → ह्रस्वस्वर

उ+उ = ऊ → दीर्घस्वर

उ+उ+उ..... = उ³ → प्लुत स्वर → नाटक = रा ऽ ऽऽऽऽ म
अ+अ+अ+अ

सजातीय स्वर
3 → अ + अ = आ
इ + इ = ई
उ + उ = ऊ

ऋ + ऋ = ॠ

(11)

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

अ
इ
उ
ऋ

अ + इ = ए
अ + ए = ऐ
अ + उ = ओ → विजातीय = ५
अ + ओ = औ → संयुक्त स्वर = ५
→ संधि स्वर = ५

अ, आ → कंठ

इ, ई → तालु

उ, ऊ = ओष्ठ

ऋ → मूर्धा

ए, ऐ → कंठ + तालु

अ + ए < अ + इ

ओ, औ = कंठ + ओष्ठ

अ + ओ < अ → + उ →

अ + इ = ए
↓
कंठ + तालु

अ + उ = ओ
कंठ + ओष्ठ

अग्रस्वर → इ, ई, ए, ऐ, ऋ

मध्य स्वर ⇒ अ

ए, ऐ < अ + इ

पश्च स्वर = आ, उ, ऊ, ओ, औ

पश्च

संवृत स्वर → उ, ऊ, इ, ई, ऋ

विवृत स्वर = आ

- अर्द्ध संवृत → ए, ओ

अर्द्ध विवृत = अ, ऐ, औ

अं , आं

अं , आं , इं , ईं

व्यंजन

↓

<u>स्वतंत्र</u>

उच्चारण ×

क् — A.

क → B

क = क् + अ

क् + आ = का

+ उ = कु

+ ऊ = कू

व्यंजन की संख्या = 33

स्पर्श व्यंजन = 25 - (क् - म्) → 5

क वर्ग → (क्) ख् ग् घ् ङ् → कंठ → अ, आ

च वर्ग → च् छ् ज् झ् ञ् → तालु → इ ई

ट वर्ग → ट् ठ् ड् ढ् ण् → मूर्धा → ऋ

त वर्ग → त् थ् द् ध् न् → दंत → ✗✗

प वर्ग प् फ् ब् भ् (म्) → ओष्ठ → उ, ऊ

Jammu - Kashmir
Himachal Pradesh
Punjab
Uttarakhand
Haryana
Delhi
Arunachal Pradesh
Uttar Pradesh
Assam
Rajasthan
Bihar
Meghalaya
Jharkhand
West Bengal
Gujarat
Madhya Pradesh
Chhattisgarh
Orissa
Maharashtra
Telangana
Andhra Pradesh
Karnataka
Tamil Nadu

- <u>वर्णमाला</u>

- **वर्ण**

- वर्ण – किसी भी भाषा के सबसे छोटी ध्वनि वर्ण कहलाती है। अर्थात् ऐसी ध्वनि जिसका अंतिम विभाजन कर दिया गया है एवं आगे विभाजन किया जाना संभव नहीं है तो वह ध्वनि वर्ण कहलाती है
- जैसे – क् च् छ् ज् झ्

- अक्षर

अक्षर की परिभाषा :- जब किसी वर्ण का अथवा वर्णों के समूह का उच्चारण जीभ के एक झटके से कर दिया जाता है। तब उस वर्ण को अथवा वर्णों के समूह को अक्षर कहा जाता है;

जैसे – च , ट , त , प इत्यादि।

कोई भी व्यंजन ध्वनि यदि ह्लनत (क्) रूप में लिखी जाती है तब तो वह वर्ण कहलाती है एवं यदि बिना हलन्त (क) लिखी जाती है तब वह अक्षर कहलाती है।

प्र. (1) निम्न में से कौन-सा अक्षर नहीं है ?

(क) ऋ

(ख) ग

(ग) आ

(घ) म्

प्र. (1) निम्न में से अक्षर स्वर नहीं है ?

(क) ऋ

(ख) इ

(ग) आ

(घ) त्

वर्ण के भेद :- हिन्दी व्याकरण में अथवा वर्णमाला में वर्ण प्रमुखत : दो प्रकार के माने जाते है –

1. स्वर वर्ण

2. व्यंजन वर्ण

- स्वर

- स्वर वर्ण

जब किसी ध्वनि का उच्चारण करने पर हमारे फेफड़ों से उठी हुई श्वास वायु हमारे मुख में आकर बिना किसी रुकावट / व्यावधान / बाधा / संघर्ष के मुख से बाहर निकल जाती है, तो वह स्वर ध्वनि कहलाती है।

- हिन्दी वर्णमाला में निम्नलिखित 11 स्वर ध्वनियाँ शामिल की गयी है।
- अ , आ , इ , ई , उ , ऊ , ऋ , ए , ऐ , ओ , औ ।

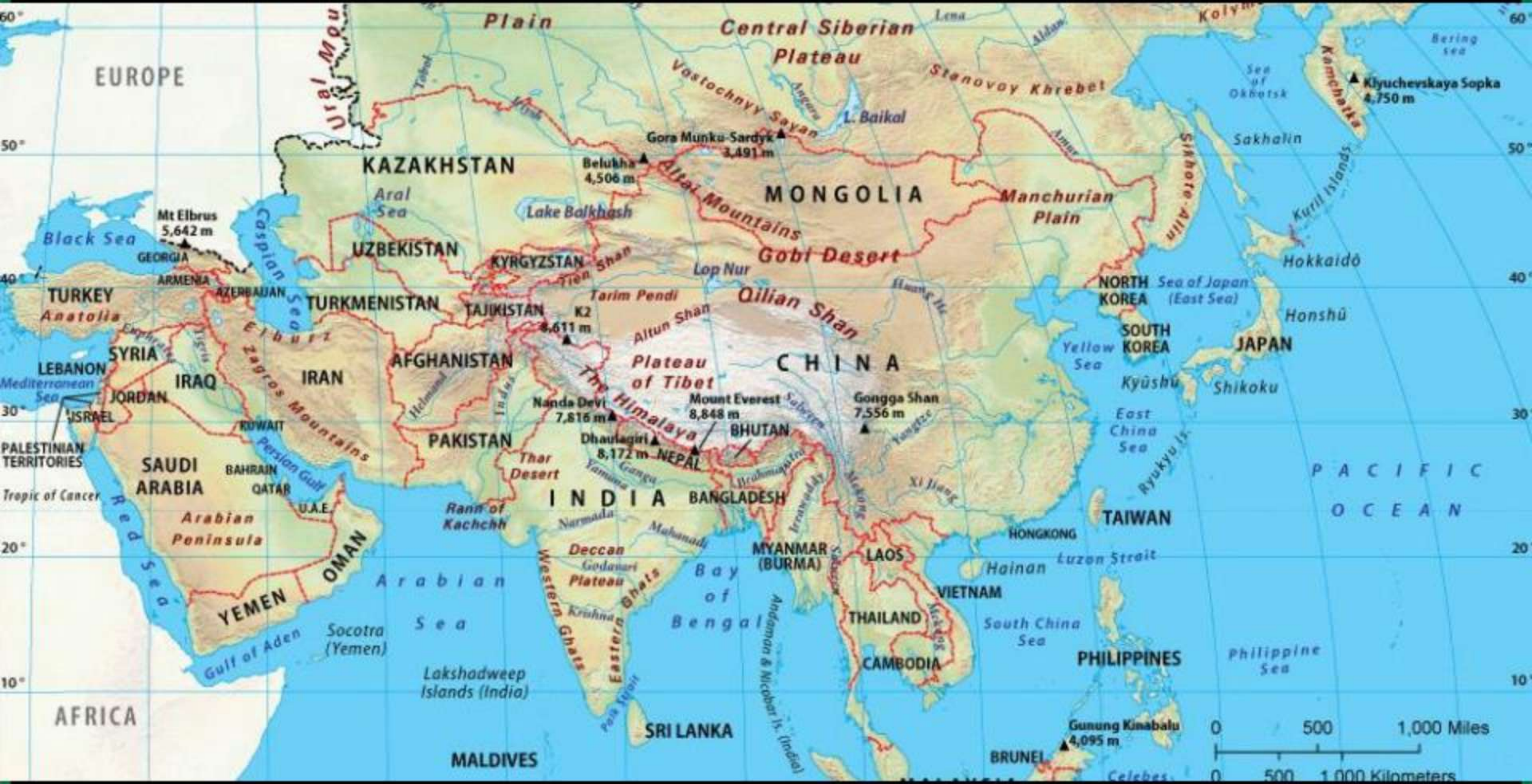

EUROPE
AFRICA
KAZAKHSTAN
UZBEKISTAN
TURKMENISTAN
KYRGYZSTAN
TAJIKISTAN
AFGHANISTAN
PAKISTAN
IRAN
IRAQ
SYRIA
LEBANON
JORDAN
ISRAEL
PALESTINIAN TERRITORIES
TURKEY
GEORGIA
ARMENIA
AZERBAIJAN
KUWAIT
BAHRAIN
QATAR
U.A.E.
SAUDI ARABIA
OMAN
YEMEN
MONGOLIA
CHINA
INDIA
NEPAL
BHUTAN
BANGLADESH
MYANMAR (BURMA)
LAOS
THAILAND
VIETNAM
CAMBODIA
NORTH KOREA
SOUTH KOREA
JAPAN
TAIWAN
HONGKONG
PHILIPPINES
BRUNEI
SRI LANKA
MALDIVES
Plain
Central Siberian Plateau
Stanovoy Khrebet
Vostochnyy Sayan
Ural Mou
L. Baikal
Gora Munku-Sardyk 3,491 m
Belukha 4,506 m
Altai Mountains
Lake Balkhash
Aral Sea
Caspian Sea
Black Sea
Mt Elbrus 5,642 m
Anatolia
Elburz
Zagros Mountains
Persian Gulf
Mediterranean Sea
Tropic of Cancer
Red Sea
Arabian Peninsula
Gulf of Aden
Socotra (Yemen)
Arabian Sea
Lakshadweep Islands (India)
Tien Shan
Tarim Pendi
Lop Nur
Gobi Desert
Qilian Shan
Altun Shan
K2 8,611 m
Plateau of Tibet
The Himalaya
Nanda Devi 7,816 m
Dhaulagiri 8,172 m
Mount Everest 8,848 m
Gongga Shan 7,556 m
Thar Desert
Rann of Kachchh
Deccan Plateau
Western Ghats
Eastern Ghats
Bay of Bengal
Andaman & Nicobar Is. (India)
Manchurian Plain
Sikhote Alin
Sakhalin
Sea of Okhotsk
Bering Sea
Kamchatka
Klyuchevskaya Sopka 4,750 m
Kuril Islands
Hokkaidō
Honshū
Shikoku
Kyūshū
Sea of Japan (East Sea)
Yellow Sea
East China Sea
Ryukyu Is.
PACIFIC OCEAN
Luzon Strait
Hainan
South China Sea
Philippine Sea
Gunung Kinabalu 4,095 m
Lena
Aldan
Amur
Angara
Ob
Tobol
Huang He
Yangtze
Xi Jiang
Mekong
Salween
Irrawaddy
Brahmaputra
Ganga
Yamuna
Indus
Helmand
Tigris
Euphrates
Narmada
Mahanadi
Godavari
Krishna
Palk Strait
0 500 1,000 Miles
0 500 1,000 Kilometers
60°
50°
40°
30°
20°
10°

- (i) हमारी हिन्दी भाषा का विकास संस्कृत भाषा से निम्न क्रमानुसार हुआ माना जाता है -
- संस्कृत - पालि – प्राकृत – अपभ्रंश – हिन्दी

- संस्कृत भाषा में मूलत : 9 एवं कुल 13 स्वर ध्वनियाँ प्रयुक्त होती है।
- मूल 9 स्वर – अ , इ , उ , ऋ , ॡ , ए , ओ , ऐ , औ ।
- अन्य स्वीकृत चार स्वर – आ , ई , ऊ , ॠ ।

- पालि एवं प्राकृत भाषा में निम्नलिखित 10 स्वर ध्वनियाँ शामिल की गयी है।
- अ , आ , इ , ई , उ , ऊ , ए , ऐ , ओ , औ

- अपभ्रंश भाषा में निम्नलिखित 8 स्वर ध्वनियाँ शामिल की गयी है।
- अ , आ , इ , ई , उ , ऊ , ए , ओ ।

प्रश्न 1. निम्न में से कौन – सी स्वर ध्वनियाँ अपभ्रंश में प्रयुक्त नहीं होती है।

(क) अ , आ

(ख) इ , ई

(ग) ए , ओ

(घ) ऐ , औ

स्वरों का वर्गीकरण –

स्वरों का वर्गीकरण प्रमुखत : पाँच आधारों पर किया जाता है

1. मात्राकाल के आधार पर
2. उच्चारण के आधार पर
3. जिह्वा के उत्थापित भाग के आधार पर
4. मुखाकृति के आधार पर
5. होठ की गोलाई के आधार पर

- विशेष तथ्य – मात्राकाल के आधार पर स्वरों का यह वर्गीकरण सर्वप्रथम महर्षि पाणिनि के द्वारा स्वरचित ‘ अष्टाध्यायी ‘ रचना में किया गया था।

- महर्षि पाणिनि ने मुर्गे को प्रात : कालीन आवाज (कू कू कू ...) को सुनकर सर्वप्रथम ‘ उ ‘ स्वर को ह्रस्व – दीर्घ – प्लुत इन तीन भागों में विभाजित किया था एवं तदुपरान्त अन्य स्वरों को भी इसी प्रकार तीन – तीन भागों में विभाजित कर दिया गया ।

मात्राकाल के आधार पर : -

किसी भी स्वर के उच्चारण में लगने वाले समय को मात्रा कहते हैं।

मात्राकाल के आधार पर स्वर तीन प्रकार के माने जाते हैं।

1. ह्रस्व स्वर
2. दीर्घ स्वर
3. प्लुत स्वर

ह्रस्व स्वर : -

1. ह्रस्व स्वर : - जब किसी स्वर के उच्चारण में सामान्य समय अर्थात् एक मात्रा का समय लगता है तब वह ह्रस्व स्वर कहलाता है।

एक मात्रा का समय लगने के कारण ह्रस्व स्वर को एक मात्रिक स्वर के नाम से भी पुकारा जाता है।

व्याकरण में ह्रस्व स्वरों की रचना सबसे पहले की गयी थी। जिसके कारण ह्रस्व स्वर को मूल स्वर के नाम से भी पुकारा जाता है।

हिन्दी वर्णमाला में निम्नलिखित 4 ह्रस्व स्वर माने गये है – ‘ अ , इ , उ , ऋ ‘

2- दीर्घ स्वर –

- दीर्घ स्वर – जब किसी स्वर के उच्चारण में सामान्य से दुगुना समय अर्थात् दो मात्राओं का समय लगता है तब वह दीर्घ स्वर कहलाता है।

- दो मात्राओं का समय लगने के कारण दीर्घ स्वर को द्विमात्रिक स्वर के नाम से भी पुकारा जाता है।

- हिन्दी वर्णमाला में निम्नलिखित 7 दीर्घ स्वर माने गये है।
- ‘आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

- इन सातों दीर्घ स्वरों को पुन : दो भागों में विभाजित किया गया है –
- (क) समानाक्षर
- (ख) सन्ध्यक्षर

- 1. समानाक्षर – समान स्वरों के योग से बनने वाले दीर्घ स्वर समानाक्षर कहलाते है -
- आ = अ + अ
- ई = इ + इ
- ऊ = उ + उ

- सन्ध्यक्षर – समान स्वरों के योग से बनने वाले दीर्घ स्वर सन्ध्यक्षर अथवा संधि स्वर कहलाते है।

- ए = अ + इ
- ऐ = अ + ए
- ओ = अ + उ
- औ = अ + ओ

कुल संख्या = (04)

- प्लुत स्वर – सामान्यत : कोई भी स्वर प्लुत नहीं होता है परन्तु जब किसी स्वर के उच्चारण में सामान्य से तिगुना समय अर्थात् तीन मात्राओं का समय लग जाता है। तब वह प्लुत स्वर माना जाता है ।

- स्वर के प्लुत रूप को दर्शाने के लिए उसके साथ '3' चिह्न का प्रयोग कर दिया जाता है।
- अ3 , आ3 , इ3 , ई3 , उ3 , ऊ3 , ऋ3 , ए3 , ऐ3, ओ3 , औ3

- विशेष तथ्य – मात्राकाल के आधार पर स्वरों का यह वर्गीकरण सर्वप्रथम महर्षि पाणिनि के द्वारा स्वरचित ‘ अष्टाध्यायी ‘ रचना में किया गया था।

- महर्षि पाणिनि ने मुर्गे को प्रात : कालीन आवाज (कू कू कू ...) को सुनकर सर्वप्रथम ' उ ' स्वर को ह्रस्व – दीर्घ – प्लुत इन तीन भागों में विभाजित किया था एवं तदुपरान्त अन्य स्वरों को भी इसी प्रकार तीन – तीन भागों में विभाजित कर दिया गया ।

- उच्चारण के आधार पर स्वरों के भेद :- उच्चारण के आधार पर स्वर दो प्रकार के माने जाते है

अनुनासिक स्वर :- सूत्र :- ‘ मुखनासिकावचनोऽनुनासिक ‘
:

जब किसी स्वर का उच्चारण करने पर श्वास वायु मुख एवं नासिका (नाक) दोनों से बाहर निकलती है तब वह अनुनासिक स्वर कहलाता है।

- स्वर के अनुनासिक रुप को दर्शाने के लिए उसके साथ (ँ) का प्रयोग कर दिया जाता है।
- ‘ अँ , आँ , इँ , ईं , उँ , ऊँ , ऋ , एं , ऐं , ओं , औं

- अननुनासिक स्वर :- जब किसी स्वर का उच्चारण करने में श्वास वायु केवल मुख से ही बाहर निकलती है तब वह अननुनासिक स्वर कहलाता है।

- अपने मूल रुप में (चन्द्रबिन्दु के बिना) लिखे हुए सभी स्वर अननुनासिक स्वर ही माने जाते है।
- ‘ अ , आ , इ , ई , उ, ऊ , ए , ऐ , ओ , औ

- ओष्ठों की गोलाई :- के आधार पर स्वरों के भेद :-
- स्वर दो प्रकार के माने जाते है –

- 1. वृताकार / वृतमुखी स्वर :-
- 2. अवृताकार / अवृतमुखी स्वर :

- 1. वृताकार / वृतमुखी स्वर :- उच्चारण करने पर होठों का आकार लगभग गोल सा हो जाना ।
- जैसे – ‘ उ , ऊ , ओ , औ

- 2. अवृताकार / अवृतमुखी स्वर :- उच्चारण करने पर होठों का आकार गोल नहीं होकर होठों का ऊपर – नीचे फैल जाना ।
- जैसे – ‘ अ , आ , इ , ई , ए , ऐ ‘

- जिह्वा के उपस्थिति भाग के आधार पर स्वरों के भेद :- इस आधार पर स्वर तीन प्रकार के माने जाते हैं-

- 1. अग्र स्वर – जीभ के आगे वाले भाग में सर्वाधिक कम्पन्न होना ।
- जैसे – ‘ इ , ई , ए , ऐ ‘

- 2. मध्य केन्द्रीय स्वर :- जीभ के बीच वाले भाग में सर्वाधिक कम्पन्न होना । जैसे – ‘ अ

- . पश्च स्वर :- जीभ के पीछे वाले भाग (जड़ वाले) भाग में सर्वाधिक कम्पन्न होना।
- जैसे – आ , उ , ऊ , ओ , औ ।

❑ प्रश्न :- निम्न में से मध्य या केन्द्रीय स्वर है-

a. अ

b. इ

c. उ

d. उक्त सभी

- 5. मुखाकृति के आधार पर स्वरों के भेद :-
- चार प्रकार

- 1. संवृत स्वर :- वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख वृत के समान बंद सा रहता है अर्थात् मुख सबसे कम खुलता है।
- जैसे :- इ , ई , उ , ऊ ऋ

- **अर्द्ध संवृत :-** वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख्य संवृत स्वरों की तुलना में आधा बंद सा रहता है अर्द्धसंवृत स्वर कहलाते हैं।
- जैसे :- ए , ओ

- विवृत स्वर :- अर्थ खुला हुआ

वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख पूरा खुला रहता है अर्थात् सबसे ज्यादा खुलता है विवृत स्वर कहलाता है।

- जैसे :- आ

- **अर्द्धविवृत स्वर :-** वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख्य विवृत स्वरों की तुलना में आधा और अर्द्धसंवृत स्वरों की तुलना में ज्यादा खुला रहता है अर्द्धविवृत स्वर कहलाते हैं।
- जैसे -: अ , ऐ ,औ

- **अर्द्धविवृत स्वर :-** वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख्य विवृत स्वरों की तुलना में आधा और अर्द्धसंवृत स्वरों की तुलना में ज्यादा खुला रहता है अर्द्धविवृत स्वर कहलाते हैं।
- जैसे -: अ , ऐ ,औ

प्रश्न: (1.1) पारिभाषिक शब्दावली का तात्पर्य क्या है ?

प्रश्नः (1.1) पारिभाषिक शब्दावली का तात्पर्य क्या है ?

वे शब्द जो सामान्य व्यवहार की भाषा के शब्द न होकर भौतिकी, रसायन, प्राणिविज्ञान, दर्शन, गणित, इंजीनियरी, विधि, वाणिज्य, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, भूगोल आदि ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के विशिष्ट शब्द होते हैं और जिनकी अर्थ सीमा सुनिश्चित और परिभाषित होती है।

जैसे संसद, विधानसभा, मानदेय

प्रश्नः (1.2) उपमा अलंकार किसे कहते हैं ?

प्रश्न: (1.2) उपमा अलंकार किसे कहते हैं ?

जहां किसी वस्तु या व्यक्ति की किसी अन्य वस्तु या व्यक्ति से समान गुण धर्म के आधार पर तुलना की जाए या समानता बताई जाए, वहां उपमा अलंकार होता है।

प्रश्न: (1.3) संस्कृत आचार्य दंडी की अलंकार संबंधी परिभाषा को स्पष्ट कीजिए ।

प्रश्नः (1.3) संस्कृत आचार्य दंडी की अलंकार संबंधी परिभाषा को स्पष्ट कीजिए ।

संस्कृत के अलंकार संप्रदाय के प्रतिष्ठापक आचार्य दण्डी के शब्दों में- 'काव्य शोभाकरान् धर्मान अलंकारान् प्रचक्षते'- काव्य के शोभाकारक धर्म (गुण) अलंकार कहलाते हैं।

❖ जहाँ तक भरतमुनि की बात है उन्होंने 4 अलंकारों (उपमा, रूपक, दीपक, यमक) का उल्लेख किया है।

प्रश्न: (1.4)शब्दालंकार का तात्पर्य क्या है ?

प्रश्न: (1.4)शब्दालंकार का तात्पर्य क्या है ?

- जिस अलंकार में शब्दों के प्रयोग के कारण कोई चमत्कार उत्पन्न हो जाता है वे 'शब्दालंकार' कहलाते है।
- दूसरे शब्दों में- जहाँ अलंकार शब्द पर आश्रित हों अर्थात शब्द के बदल देने पर अलंकारत्व नष्ट हो जाता हो।

प्रश्न: (1.5)तद्भव शब्द किसे कहते हैं ?

प्रश्न: (1.5)तद्भव शब्द किसे कहते हैं ?

तद्भव शब्द तद्+भव के योग से बना है यहाँ तद् का अर्थ होता है 'उससे' तथा भव का अर्थ होता है 'होने वाले' अर्थात ऐसे शब्द जिनकी मूल उत्पति को संस्कृत भाषा से हुए माने जाते हैं

प्रश्न: (1.6) बहुव्रीहि समास किसे कहते हैं ?

प्रश्न: (1.6) बहुव्रीहि समास किसे कहते हैं ?

जब किसी सामासिक पद में प्रयुक्त दोनो पद अपना मूल अर्थ खो देते हैं एवं कोई अन्य ही अर्थ प्रकट करने लग जाते हैं तो वहाँ बहुव्रीहि समास माना जाता है।

1. वर्णमाला की सबसे छोटी इकाई बताइये

- वर्ण किसी भी भाषा के सबसे छोटी ध्वनि वर्ण कहलाती है। अर्थात् ऐसी ध्वनि जिसका अंतिम विभाजन कर दिया गया है एवं आगे विभाजन किया जाना संभव नहीं है तो वह ध्वनि वर्ण कहलाती है
- जैसे – क् च् छ् ज् झ्

2. अक्षर और वर्ण में अन्तर बताये

अक्षर की परिभाषा :- जब किसी वर्ण का अथवा वर्णों के समूह का उच्चारण जीभ के एक झटके से कर दिया जाता है। तब उस वर्ण को अथवा वर्णों के समूह को अक्षर कहा जाता है। जैसे – च , ट , त , प इत्यादि।

कोई भी व्यंजन ध्वनि यदि ह्लनत (क्) रुप में लिखी जाती है तब तो वह वर्ण कहलाती है एवं यदि बिना हलन्त (क) लिखी जाती है तब वह अक्षर कहलाती है।

3. ध्वनियाँ शामिल की गयी है ?

- हिन्दी वर्णमाला में निम्नलिखित 11 स्वर ध्वनियाँ शामिल की गयी है।
- अ , आ , इ , ई , उ , ऊ , ऋ , ए , ऐ , ओ , औ ।

4. स्वरों का वर्गीकरण प्रमुखत : कितने आधारों पर किया जाता है

स्वरों का वर्गीकरण प्रमुखत : पाँच आधारों पर किया जाता है

1. मात्राकाल के आधार पर
2. उच्चारण के आधार पर
3. जिह्वा के उत्थापित भाग के आधार पर
4. मुखाकृति के आधार पर
5. होठ की गोलाई के आधार पर

5. विसर्ग (:) क्या है

- **विसर्ग (:)** विसर्ग का प्रयोग स्वर के बाद किया जाता है। इसका प्रयोग प्रायः संस्कृत में पाया जाता है फिर भी, हिन्दी में इसका प्रयोग इस प्रकार करते है –

  प्रात : , प्राय : , अंतः करण, दुः ख आदि।

6. चन्द्रबिन्दु (ँ) क्या है

- **चन्द्रबिन्दु (ँ)** हिन्दी की यह अपनी ध्वनि है। यह संस्कृत में नहीं है। इसके उच्चारण के समय हवा मुँह और नाक दोनों से निकलती है। चन्द्रबिन्दु युक्त शब्दों का प्रयोग निम्नलिखित है – गाँव , पाँव , बाँध , आँगन आदि।

7. हलन्त (◌्)क्या है

- **हलन्त (्)** जहाँ दो वर्णों को जोड़ने में असुविधा होती है, वहाँ हलन्त चिह्न लगा दिया जाता है। जैसे – पद्मा , पट्ठा , बुड् ढा , खाद्य आदि।

8. रेफ (') का प्रयोग कहाँ किया जाता है

9. रेफ (‘) का प्रयोग कहाँ किया जाता है

- **रेफ (‘):–** ‘र’ का चिह्न जब व्यंजन वर्ण के ऊपर लगाया जाता है तो उसे रेफ कहते है। जैसे – गर्म, धर्म, कर्ज, वर्ण आदि।

10. चंद्र और चंद्र बिंदु में अंतर बताइये

- **चन्द्र (ॅ):-** कुछ शब्दों में इस चिह्न का प्रयोग होता है। यह बिन्दु रहित चन्द्र है जिसका उच्चारण 'औ ' के समान होता है (आ के समान नहीं) प्राय: अंग्रेजी के शब्दों के साथ ही इसका प्रयोग होता है । जैसे- नॉलेज, डॉक्टर, ऑफिस आदि।

- व्यंजन

- **व्यंजन-** वे वर्ण जिनके उच्चारण में किसी अन्य वर्ण के सहयोग की आवश्यकता होती है अर्थात् स्वरों के सहयोग से उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ व्यंजन कहलाती हैं।

- व्यंजनों की संख्या : 33 होती है।
- क से म तक – 25 (स्पर्श व्यंजन)
- य र ल व – 04 (अन्त : स्व)
- श ष स ह – 04 (उष्म / संघर्षी)

Welcome

- स्पर्शी (16) – क, ख, ग, घ, ट, ठ, ड, ढ, त, थ, द, ध, प, फ, ब, भ.
- संघर्षी (4) – श, ष, स, ह.
- स्पर्श-संघर्षी (4) – च, छ, ज, झ.
- नासिक्य / अनुनासिक (5) – ङ, ञ, ण, न, म.
- पार्श्विक (1) – ल.
- प्रकंपी / लुंठित (1) – ऱ
- उत्क्षिप्त (2) – ड, ढ.
- संघर्षहीन / अंतस्थ (2) – य, व.

(1) स्पर्शी व्यंजन :-

वे व्यंजन जिनके उच्चारण में विभिन्न अवयवों का स्पर्श किया जाता है

इन्हें स्पर्शी व्यंजन कहते हैं।

स्पर्शी व्यंजन :-

क़ [k] [q]	ख़ [kʰ] [x]	ग़ [g] [ɣ]	घ [gʱ]	ङ [ŋ]
च [t͡ʃ]	छ [t͡ʃʰ]	ज़ [d͡ʒ] [z]	झ़ [d͡ʒʱ] [ʒ]	ञ [ɲ]
ट [t̠] [ʈ]	ठ [t̠ʰ] [ʈʰ]	ड़ [d̠] [ɖ] [ɽ]	ढ़ [d̠ʱ] [ɖʱ] [ɽ	ण [ɳ]
त [t̪]	थ [t̪ʰ]	द [d̪]	ध [d̪ʱ]	न [n]
प [p]	फ़ [pʰ] [f]	ब [b]	भ [bʱ]	म [m]

(2) संघर्षी व्यंजन :-

वे व्यंजन जिनके उच्चारण में दो उच्चारण अव्यव इतनी निकटता पर आ जाते हैं कि बीच का मार्ग छोटा हो जाता है तो वायु संघर्ष के साथ बाहर निकलती है|

(3) स्पर्श संघर्षी :-

वे व्यंजन जिनके उच्चारण में उच्चारण का समय अपेक्षाकृत अधिक होता है और उच्चारण के बाद वाला भाग संघर्षी हो जाता है **स्पर्श संघर्षी** व्यंजन कहलाते हैं।

च [t͡ʃ] छ [t͡ʃʰ] ज़ [d͡ʒ] [z] झ़ [d͡ʒʱ] [ʒ]

जैसे:- च, छ, ज, झ

4. नासिक्य व्यंजन :

वे व्यंजन जिनके उच्चारण में हवा प्रमुख वेग नासिका से निकालता है, नासिक्य व्यंजन कहलाते हैं।

5. उत्क्षिप्त व्यंजन :-

वे व्यंजन जिनके उच्चारण में जिवा ऐसा महसूस कराती है जैसे इन्हें फेंक रही हो, उत्क्षिप्त व्यंजन कहलाते हैं

जैसे- ड़ ढ़

Note- इन्हें ताडनजात, द्विगुणी, द्विपृष्ठ वर्ण भी कहते हैं।

7. प्रकम्पित व्यंजन :-

वे वर्ण जिनके उच्चारण में जिह्वा (जीभ)को दो-तीन बार कंपन करना पड़े, प्रकम्पित वर्ण कहलाता है।

जैसे- र

विशेष :- जिस्बा से लुढकता हुआ सा महसूस होने के कारण इसे 'लुंठित' वर्ण भी कहा जाता है।

पार्श्विक व्यंजन (अर्थ- पास, किसारा)

वह वर्ण जिनके उच्चारण में जिह्वा (जीभ)मसूड़ों को छूती है और हवा का प्रमुख वेग जिवा के आस-पास / अगल-बगल से निकल जाता है।

पार्श्विक व्यंजन कहलाता है।

जैसे- **ल**

(8) संघर्षहीन व्यंजन

वे वर्ण जिनके उच्चारण में जिवा को संघर्ष नहीं करना पड़ता है। अर्थात स्वरों से मिलता जुलता योग रहता है, संघर्षहीन व्यंजन कहलाते हैं।

जैसे:- यः व

विशेष :- इन्हें अर्द्धस्वर भी कहते हैं।

विशेष :- इन्हें अर्द्धस्वर भी कहते हैं।

(2). बाह्य प्रयत्न के आधार पर व्यंजन के दो भेद होते हैं :-

(1) श्वांस वायु की मात्रा के आधार पर

(2) स्वर तंत्रियों में कम्पन के आधार पर

(1) अल्पप्राण:-

वे वर्ण जिनके उच्चारण में मुखविवर से कम मात्रा में वायु बाहर निकलती है अल्पप्राण वर्ण कहलाते हैं।

जैसे: -

(1) अल्पप्राण:-

वे वर्ण जिनके उच्चारण में मुखविवर से कम मात्रा में वायु बाहर निकलती है अल्पप्राण वर्ण कहलाते हैं।

(2) महाप्राण :-

वे वर्ण जिनके उच्चारण में मुखविवर से अधिक मात्रा में वायु बाहर निकलती है **महाप्राण वर्ण** कहलाते हैं।

क	[k] [q]	ख	[kʰ] [x]	ग	[g] [ɣ]	घ	[gʱ]	ङ	[ŋ]
च	[t͡ʃ]	छ	[t͡ʃʰ]	ज	[d͡ʒ] [z]	झ	[d͡ʒʱ] [ʒ]	ञ	[ɲ]
ट	[ʈ] [t]	ठ	[ʈʰ] [tʰ]	ड	[ɖ] [d] [ɽ]	ढ	[ɖʱ] [dʱ] [ɽʱ]	ण	[ɳ]
त	[t̪]	थ	[t̪ʰ]	द	[d̪]	ध	[d̪ʱ]	न	[n]
प	[p]	फ	[pʰ] [f]	ब	[b]	भ	[bʱ]	म	[m]
श	[ʃ]	ष	[ʂ]	स	[s]	ह	[ɦ]		

(2) स्वर तंत्रियों में कम्पन के आधार पर

(1) अघोष -

वे वर्ण जिनके उच्चारण में गूँज / नाद / कंपन नहीं होता है अघोष वर्ण कहलाते हैं।

क	[k] [q]	ख	[kʰ] [x]		
च	[t͡ʃ]	छ	[t͡ʃʰ]		
ट	[ʈ] [t]	ठ	[ʈʰ] [tʰ]		
त	[t̪]	थ	[t̪ʰ]		
प	[p]	फ	[pʰ] [f]		
श	[ʃ]	ष	[ʂ]	स	[s]

(2) घोष / संघोषः-

वे वर्ण जिनके उच्चारण में

गूँज , नाद / कंपन अधिक होता है **घोष** वर्ण कहलाते हैं

❑ ड, ट की पहचान के विशेष नियम

➢ यदि ड और ढ का प्रयोग शब्द के आरम्भ में हो जाए तो इनके नीचे बिन्दी नहीं लगती है।

जैसे:- डमरू, ढक्कन, ढपली आदि ।

➢ यदि ड और ढ से पहले अनुस्वार (0) आ जाए

तो इनके नीचे बिन्दी नहीं लगती है।

जैसे:- पंडित, पंडा, डंडा, पांडाल, चांडाल आदि

❑ ड, ट की पहचान के विशेष नियम

- 3. यदि ड और ढ से पहले अधूरा पंचम वर्ण (ण्) जाए तो इनके नीचे बिन्दी नहीं लगती है।

जैसे:- पण्डित, पण्डा, पाण्डाल आदि।

- यदि ड और ढ का प्रयोग अंग्रेजी भाषा के शब्दों में हो जाए तो इनके नीचे बिन्दी नहीं लगती है।

जैसे:- रोड, लाउड, प्राउड, साउन्ड आदि।

- यदि ड और ढ का प्रयोग संस्कृत भाषा के शब्दों में हो जाए तो इनके नीचेबिन्दी नहीं लगती है।

जैसे:- षडानन, षड आदि ।

❑ आगत स्वर-

- बॉल
- गॉल
- फ़ुट्बॉल
- बॉलीवुड
- कॉमन
- डॉलर
- कॉलर
- वॉल्यूम
- वॉलीबॉल

❑ आगत व्यंजन-

क़ ख़ ग़ ज़ फ़

❑ आगत व्यंजन-

- ‘ज़’ तथा ‘फ़’ में जब नुक्ता लगता है तो उर्दू तथा अंग्रेज़ी दोनों ही भाषाओं के शब्द बनते हैं।
- ‘ज़’ से युक्त उर्दू के शब्द [1] कर्ज़ , ताज़ा , ज़िंदगी , ज़िल्लत तथा ज़मानत आदि ।

(जरा => थोड़ा और ज़रा => बुढ़ापा)

- ‘ज़’ से युक्त अंग्रेज़ी के शब्द [1] रोज़ , इज़ , ज़ीरो , प्राइज़ तथा न्यूज़ आदि ।
- ‘फ़’ से युक्त उर्दू के शब्द [1] फ़रियाद , फ़तवा , फ़न , काफ़िला तथा फ़साद आदि ।
- ‘फ़’ से युक्त अंग्रेज़ी के शब्द [1] कफ़ , फ़ेल , फ़ाइट , फ़ाइन तथा फ़ादर